शोध मंथन Vol. XI No.III July-Sept. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

सी0 एल0 स्टीवेन्सन के प्रवर्तनात्मक परिभाषा की समीक्षा (The Analysis of C. L. Stevenson's Persuasive Definition)

कोमल कुशवाहा
शोध छात्रा, दर्शनशास्त्र विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज,
Email: kushwahakomal966@gmail.com.

सारांश

मूल्यों से सम्बन्धित वाद–विवाद में प्रवर्तनात्मक परिभाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस सम्बन्ध में शोध–पत्र के अन्तर्गत प्रवर्तनात्मक परिभाषा के स्वरुप एवं महत्व को समझने के लिए मैनें निम्न महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार किया है। शोध–पत्र के प्रथम खण्ड भूमिका में इस प्रश्न पर विचार किया गया है कि प्रवर्तनात्मक परिभाषा का आशय क्या है? क्या यह परिभाषा का एक प्रकार है या इसका कोई विशेष अर्थ है? द्वितीय समस्या यह है कि स्टीवेन्सन इस परिभाषा को किस रुप में स्वीकार करते हैं? इस समस्या पर विचार शोध–पत्र के द्वितीय खण्ड में किया गया है। शोध–पत्र के तृतीय खण्ड में इस प्रश्न पर विचार किया गया है कि प्रवर्तनात्मक परिभाषा का हमारे नैतिक जीवन में क्या महत्व है? अन्तिम खण्ड में इस तथ्य पर ध्यानकेन्द्रित किया गया है कि प्रवर्तनात्मक परिभाषा की आलोचना किस प्रकार की गयी तथा उसका समाधान कैसे किया जा सकता है। इस प्रकार निष्कर्ष तक पहुँचने के पूर्व शोध–पत्र के चार महत्वपूर्ण खण्डों के अन्तर्गत उपर्युक्त समस्या पर विचार किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उददेश्य सी0 एल0 स्टीवेन्सन के प्रवर्तनात्मक परिभाषा के स्वरुप एवं महत्व को स्पष्ट करना एवं उनके उपर्युक्त परिभाषा का आलोचनात्मक अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द– *परिभाषा, विश्लेषणात्मक प्रारुप, प्रवर्तनात्मक परिभाषा, अनुमोदन, अननुमोदन।*

प्रस्तावना

प्रवर्तनात्मक परिभाषा एक ऐसी युक्ति है, जिसका ज्ञान हमें सी0 एल0 स्टीवेन्सन के द्वारा 1938 में प्रकाशित लेख "Persuasive Definitions" एवं 1944 में प्रकाशित उनकी पुस्तक *Ethics and Language* से प्राप्त होता है। स्टीवेन्सन के अनुसार, प्रवर्तनात्मक परिभाषा के द्वारा किसी पद को, जिसका वर्णनात्मक अर्थ सुपरिचित हो, नवीन वैचारिक अर्थ प्रदान करना है। किन्तु इस परिभाषा से उस पद के संवेगात्मक अर्थ में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं होता। इस परिभाषा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के अभिवृत्ति को ज्ञानतः या अज्ञानतः प्रभावित करते हुए उनके आग्रहों को दिशा–निर्देश देना है (1938, p.331)। जहाँ तक प्रवर्तनात्मक परिभाषा के स्वरुप का प्रश्न है (क्या यह परिभाषा का एक प्रकार है या कोई अन्य रुप), इसके सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल के भाषाशास्त्री एवं तर्कशास्त्री इसे परिभाषा का एक

महत्वपूर्ण रुप मानते हैं।

परिभाषा का महत्वपूर्ण प्रकार

'प्रवर्तनात्मक परिभाषा' वास्तव में परिभाषा का एक प्रकार है, जिसे पूर्वकालीन तर्कशास्त्रियों एवं भाषाशास्त्रियों ने विभिन्न परिभाषाओं के मध्य स्वीकार किया गया (Robinson,1950,1953)। इसी प्रकार वर्तमान तर्कशास्त्री भी अन्य विभिन्न प्रकार की परिभाषाओं के मध्य प्रवर्तनात्मक परिभाषा के महत्व पर अधिक बल देते हैं (Hurley, 2000; Copy and Cohen, 2001)। पैट्रिक जे0 हर्ले अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक *A Concise Introduction to Logic* में मुख्यतः पांच प्रकार की परिभाषा को स्वीकार करते हैं (2000, pp.93-96) – (a) स्वनिर्मित परिभाषा- इस परिभाषा के द्वारा किसी शब्द के अर्थ को प्राथमिक रुप में स्वीकार किया जाता है। उदाहरणार्थ, जब शेर और चीता के माध्यम से सन्तानोत्पत्ति हुई तो पहली बार 'टाइगोन' (Tigon) तथा 'लिगर' (Liger) नामक पद की गवेषणा हुई। 'टाइगोन' शब्द का अर्थ तब प्रयुक्त किया गया जब पिता एक चीता था एवं माता एक शेरनी। जबकि 'लिगर' शब्द का अर्थ इसके विपरीत रुप में स्वीकार किया गया। (b) कोश–विषयक परिभाषा– इसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ हमारे द्वारा प्रयुक्त कोई पद पहले से ही किसी भाषा में निहित हो। हर्ले के अनुसार सभी शब्दकोशीय परिभाषा शाब्दिक परिभाषा की श्रेणी में आते हैं। (c) सटीक परिभाषा– इसका प्रयोग निश्चित सीमावर्ती मामलों में प्रयुक्त होता है जहाँ किसी पद का अर्थ अस्पष्ट हो। (d) सैद्धान्तिक परिभाषा- इस परिभाषा के द्वारा किसी पद में निहित आधारभूत विशेषताओं को सूचित करते हुए सिद्धान्त के रुप में उस पद को अर्थ प्रदान किया जाता है। सभी प्रकार की वैज्ञानिक परिभाषाएँ इसमें समाविष्ट हैं। (e) प्रवर्तनात्मक परिभाषा- इसका कार्य अनुमोदन एवं अननुमोदन की अभिवृत्ति को उत्पन्न करते हुए किसी पद को मूल्याधारित अथवा भावनावेशित अर्थ प्रदान करना है।

इन विभिन्न प्रकार की परिभाषाओं के मध्य प्रवर्तनात्मक परिभाषा के प्रतिपादन का श्रेय सर्वप्रथम सी0 एल0 स्टीवेन्सन को दिया जाता है (1938;1944)। वास्तव में प्रवर्तनात्मक परिभाषा का उदाहरण नैतिक वाद–विवाद, सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों के विचार–विमर्श एवं वैज्ञानिक तर्क–वितर्क से प्राप्त किया जाता है। स्पष्टतः प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रस्तुतीकरण स्टीवेन्सन के 'प्रवर्तनात्मक परिभाषा की युक्ति' के प्रति दृष्टिपात करने हेतु किया गया है।

स्टीवेन्सन का प्रवर्तनात्मक परिभाषा सम्बन्धी युक्ति

जब स्टीवेन्सन कहते हैं कि प्रवर्तनात्मक परिभाषा सभी प्रकार के वाद–विवाद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तो उसका मुख्य सम्बन्ध नैतिक असहमति से था। उनके अनुसार, जब दो व्यक्ति या अधिक व्यक्ति नैतिक विवाद में व्यस्त होते हैं तो वे सोचते हैं कि उनके मध्य विश्वास सम्बन्धी असहमति है; जबकि वास्तविकता यह है कि उनमें यह असहमति मात्र भिन्न–भिन्न अभिवृत्ति के फलस्वरुप होती है। इस प्रकार के भ्रम को दूर करने के लिए स्टीवेन्सन ने प्रवर्तनात्मक परिभाषा सम्बन्धी सिद्धान्त को प्रस्तुत किया जो कि संवेगात्मक एवं वर्णनात्मक अर्थ के मध्य भिन्नता पर आधारित है। जे0 औमी के अनुसार भाषा के संवेगात्मक अर्थ की विवेचना सर्वप्रथम सी0 के0 ऑगडन एवं आई0 ए0 रिचर्ड्स के द्वारा अपनी पुस्तक *The Meaning*

of Meaning (1923) में की गयी। जिसके अनुसार, वर्णनात्मक अर्थ किसी शब्द का सारभूत तथ्यात्मक सामग्री है, जबकि संवेगात्मक अर्थ शब्द के प्रयोगकर्ता की भावना अथवा अभिवृत्ति, जो सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों हो सकते हैं, को सूचित करता है (Walton, Douglas,2001,p.118)।

ध्यातव्य हो कि स्टीवेन्सन वर्णनात्मक एवं संवेगात्मक अर्थ को परिभाषित करते हुए किसी पद के वर्णनात्मक अर्थ को ''संज्ञान को प्रभावित करने वाले चिन्ह'' के रुप में, जबकि किसी पद के संवेगात्मक अर्थ को ''अभिवृत्ति को जागृत करने वाले चिन्ह'' के रुप में प्रस्तुत करते हैं (1944, pp.60-70)। उनके अनुसार, ''स्वतन्त्रता'' (Liberty) एवं ''स्वच्छंदता/नियम का उल्लंघन'' (License) का वर्णनात्मक अर्थ यद्यपि समान है किन्तु संवेगात्मक अर्थ भिन्न–भिन्न है, इसके माध्यम से वक्ता, श्रोता में सकारात्मक अथवा नकारात्मक अभिवृत्ति को जागृत करने में समर्थ हो सकता है (Stevenson,1944, p.61)। ''स्वच्छन्दता'' (License) नामक पद का नकारात्मक संवेगवादी अर्थ है, क्योंकि यह नकारात्मक अभिवृत्ति को जागृत करता है; जबकि ''स्वतन्त्रता'' (Liberty) नामक पद का सकारात्मक संवेगवादी अर्थ है, क्योंकि यह सकारात्मक अभिवृत्ति को जागृत करता है। किसी राजनैतिक वाद–विवाद में, यदि कोई वक्ता किसी प्रस्तावित अधिनियम (Bill) के विरोध में है तो वह तर्क कर सकता है कि यह विधेयक स्वतन्त्रता को प्रतिबंधित करता है, जबकि यदि कोई वक्ता इस विधेयक के पक्ष में है तो वह यह भी तर्क कर सकता है कि यह विधेयक स्वच्छंदता/कानून के उल्लंघन को प्रतिबन्धित करता है।

स्पष्टतः नैतिक एवं राजनैतिक पद में निहित संवेगात्मक अर्थ के प्रवर्तनात्मक शक्ति का निरीक्षण एवं अध्ययन जेरेमी बेन्थम के द्वारा पहले से ही किया गया था। 1824 में प्रकाशित अपनी रचना *The Book of Fallacies* में बेन्थम दो पदो के मध्य विभिन्नता करते हैं (1969, p.337); (a) वे पद जिनमें सकारात्मक संवेगवादी प्रभाव निहित है तथा (b) वे पद जिनमें नकारात्मक संवेगवादी प्रभाव संलिप्त है। उनके अनुसार प्रशंसामूलक पदों में अनुमोदन की भावना भी निहित होती है; उदाहरण के रुप में बेन्थम *सम्मान* एवं *आभार* नामक पद को प्रस्तुत करते हैं (p.337)। इसके विपरीत निन्दामूलक पद में अननुमोदन के भाव निहित हैं; उदाहरणार्थ, वे *कामना* एवं *लालच* नामक पद को प्रस्तुत करते हैं। बेन्थम कहते हैं कि स्पष्टतः कोई नीति शुभ है अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में अपने निष्कर्ष के समर्थन में कोई सम्बन्धित कारण प्रस्तुत किये बिना ही आप किसी उचित प्रशंसात्मक एवं निन्दात्मक पदों का चुनाव करते हुए उस नीति के पक्ष एवं विपक्ष में तर्क प्रस्तुत कर सकते हैं (Walton, Douglas, 2005, p.161)।

अतः स्टीवेन्सन महज प्रथम चिन्तक नहीं थे जिन्होंने इस तथ्य का अध्ययन किया कि प्रशंसात्मक अर्थ के साथ शब्दों का चयन एक प्रवर्तनकारी तर्क युक्ति हो सकती है। किन्तु प्रवर्तनात्मक परिभाषा की स्थापना सर्वप्रथम स्टीवेन्सन के द्वारा ही किया गया जो कि इस बात की व्याख्या करता है कि किस प्रकार प्रवर्तनात्मक परिभाषा के उपयोग के द्वारा वक्ता, श्रोता के अभिवृत्ति को रुपान्तरित करते हुए नैतिक समस्या का समाधान करता है। जिसकी चर्चा निम्न खण्ड में वर्णित है।

स्टीवेन्सन के अनुसार, किसी पद को परिभाषित करने का अर्थ उस पद के वर्णनात्मक अथवा संवेगात्मक अर्थ के विस्तारक्षेत्र को संशोधित करना है। इसी प्रकार *प्रवर्तन* के अर्थ का स्पष्टीकरण करते हुए वे कहते हैं कि इसका अर्थ है, श्रोता के अभिवृत्ति को प्रभावित करते हुए उनको प्रेरित करना। यही कारण है कि किसी पद के वर्णनात्मक अर्थ को पुर्नपरिभाषित करते हुए श्रोता के अभिवृत्ति को प्रभावित करने की प्रक्रिया को स्टीवेन्सन प्रवर्तनात्मक परिभाषा की संज्ञा देते हैं। ध्यातव्य हो कि औमी स्टीवेन्सन के उपर्युक्त परिभाषा का स्पष्टीकरण चार शर्तों के माध्यम से करते हैं (1985, p.187):

(1) परिभाष्य पद प्रबल संवेगात्मक अर्थ से संलिप्त हो।

(2) उस पद का वर्णनात्मक अर्थ अस्पष्ट एवं जटिल हो।

(3) पुनर्परिभाषा के माध्यम से परिवर्तित वर्णनात्मक अर्थ साधारण श्रोता के द्वारा स्वीकार्य हो।

(4) उस पद का संवेगात्मक अर्थ अपरिवर्तित रहे।

उपर्युक्त शर्तों की झांकी हमें स्टीवेन्सन द्वारा प्रयुक्त ''सभ्यता'' नामक पद के स्पष्टीकरण से प्राप्त होती है–

प्राचीन अर्थ– 'बहुशिक्षित एवं विविध कलाओं से परिचित होना'।

नवीन वैचारिक अर्थ– 'कल्पनात्मक संवेदनशीलता'।

कहा जा सकता है कि यद्यपि ''सभ्यता'' नामक पद प्रशंसात्मक मूल्य से सम्बन्धित है, जो कि दोनों परिभाषाओं में समाहित है; किन्तु इन परिभाषाओं में ''सभ्यता'' नामक पद का वर्णनात्मक अर्थ भिन्न–भिन्न है।

स्टीवेन्सन के प्रवर्तनात्मक परिभाषा से प्रभावित होकर बाद के चिन्तकों ने इस विषय पर अपने मत प्रस्तुत किये। निकोलस बनिन एवं जियुआन यू अपनी लेख "Persuasive Definition" में कहते हैं कि किसी पद का प्रवर्तनात्मक परिभाषा या तो किसी तर्क का अनुमोदन करता है अथवा उसका अननुमोदन। किन्तु यह परिभाषा इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है जैसे कि यह निष्पक्ष एवं पूर्णतः स्वीकृत हो, तथा श्रोता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसे परिभाषा को बिना किसी प्रश्न के स्वीकार करे (2004)। इसी प्रकार इरविंग एम0 कॉपी और कार्ल कोहेन अपनी पुस्तक *Introduction to Logic* में स्वीकार करते हैं कि तर्कशास्त्र में निहित अन्य सभी प्रकार की परिभाषाओं से भिन्न प्रवर्तनात्मक परिभाषा वक्ता एवं श्रोता के भावनाओं को प्रभावित करने वाले अभिव्यंजनापूर्ण भाषा–प्रयोग पर ध्यान केन्द्रित करता है ताकि उनके व्यवहार में मूलभूत परिवर्तन लाया जा सके (1990, p.137)। यही कारण है कि पैट्रिक जे0 हर्ले स्वीकार करते हैं कि प्रेरक परिभाषाओं का मूल्यांकन उनकी सत्यता एवं असत्यता के आधार पर नहीं की जाती, अपितु एक अभिप्रेरक यंत्र के रुप में उनकी प्रभावोत्पादकता के आधार पर की जाती है (2000, p.94)।

स्टीवेन्सन प्रवर्तनात्मक परिभाषा के अतिरिक्त प्रवर्तनात्मक अर्द्ध–परिभाषा को भी स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार प्रवर्तनात्मक परिभाषा का कार्य किसी पद के संवेगात्मक अर्थ में बिना किसी मूलभूत परिवर्तन के उस पद के वर्णनात्मक अर्थ को परिवर्तित करना है; जबकि

इससे भिन्न प्रवर्तनात्मक अर्द्ध–परिभाषा का मुख्य उद्देश्य किसी पद के वर्णनात्मक अर्थ में बिना किसी मूलभूत परिवर्तन के उस पद के संवेगात्मक अर्थ को रुपान्तरित करना है। इन दो घटनाओं में मात्र एक प्रकार का अर्थ परिवर्तित होता है (1944, p.279)।

पुनश्च् प्रवर्तनात्मक अर्द्ध–परिभाषा का स्पष्टीकरण कैसेनोवा ने (Casanova) "गुप्तचर" नामक पद के सहारे किया है–

"गुप्तचर" का अर्थ है, जो गुप्त तथ्यों को प्रकट करने का कार्य करे। किन्तु कुछ व्यक्ति इसे 'चुगली करने' के अर्थ में घृणास्पद मानते हैं, जबकि कोई इसे एक सम्मानजनक व्यवहार मानता है, क्योंकि गुप्तचर राज्य के कल्याण का शुभचिन्तक, शत्रुओं का सर्वनाशक तथा अपने राजकुमारों का निष्ठावान सेवक है।

इस उदाहरण में देखा जा सकता है कि "गुप्तचर" का वर्णनात्मक अर्थ समान होते हुए भी दो भिन्न संवेगात्मक अर्थ निहित हैं।

अभिप्रेरक शक्ति की प्रभावोत्पादकता के सम्बन्ध में डब्ल्यू0 डी0 हडसन कहते हैं कि यह प्रभावोत्पादकता वर्णनात्मक एवं संवेगात्मक अर्थ के संयुक्त उपयोग के आधार पर क्रियान्वित होता है। संवेगात्मक अर्थ में अभिप्रेरक परिभाषा किसी संगत पद की प्रशंसा एवं निन्दा करता है जबकि अपने वर्णनात्मक अर्थ में यह उन तथ्यों को सूचित करता है जिसके द्वारा यह प्रशंसा एवं निन्दा की जाती है। प्रथम अर्थ प्रोत्साहक बल प्रदान करता है जबकि द्वितीय मार्गदर्शित करता है (1983, p.128)।

वस्तुतः अभिप्रेरकात्मक परिभाषा किसी शब्द के संवेगात्मक मूल्यांकन को समान रुप से प्रस्तुत करते हुए उसके वर्णनात्मक अर्थ को रुपान्तरित करना है, जो कि रुपकात्मक अथवा लाक्षणिक अर्थ में प्रयुक्त 'सत्य' एवं 'वास्तविक' शब्दों के माध्यम से अभिज्ञेय है। उपर्युक्त उदाहरण में 'वास्तविक सभ्यता' की बात की गयी है जो कि 'प्राचीन सभ्यता' के अर्थ से भिन्न है। इसी प्रकार स्टीवेन्सन विभिन्न शब्दों के वास्तविक अर्थ का स्पष्टीकरण प्रवर्तनात्मक परिभाषा के माध्यम से करते हैं जो कि प्राचीन अर्थ से भिन्न से हैं। उनके अनुसार, "दानपुण्य" का वास्तविक अर्थ मात्र सोना–चाँदी दान करना नहीं है, अपितु प्रापक को समझना और सांत्वना देना है। इसी प्रकार "सच्चे प्रेम" का अर्थ विचारों के मध्य संचायत्मकता है। वास्तविक "साहस" का अर्थ प्रतिकूल जनमत के विरुद्ध प्रयुक्त शक्ति है (1938, p.334)।

स्टीवेन्सन के नीतिशास्त्र में प्रवर्तनात्मक परिभाषा का महत्व

स्टीवेन्सन प्रथम विश्लेषणात्मक प्रारुप (First Pattern of Analysis) के अन्तर्गत श्रोता के अभिवर्षत्ति में परिवर्तन करने का मुख्य आधार अनुमोदन एवं अननुमोदन की अभिवर्षत्ति को यद्यपि कि स्वीकार करता है, किन्तु समस्या यह है कि वह अपनी द्वितीय विश्लेषणात्मक प्रारुप (Second Pattern of Analysis) के अन्तर्गत श्रोता के अभिवर्षत्ति में परिवर्तन करने के मुख्य साधन के रुप में अनुमोदन एवं अननुमोदन की अभिवर्षत्ति को स्वीकार करने के स्थान पर प्रवर्तनात्मक परिभाषा को क्यों स्वीकार किया (1944, chap.4)। इस सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि श्रोता निर्बौद्धिक

नहीं है, उससे किसी भी नैतिक कथन को स्वीकार करवाने के लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम वक्ता नैतिक कथन के सत्य एवं वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करे। वास्तव में प्रवर्तनात्मक परिभाषा का कार्य किसी पद के सत्य एवं वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करना ही है। इस सम्बन्ध में स्टीवेन्सन अपनी लेख "Persuasive Definitions" में कहते हैं कि प्रवर्तनात्मक परिभाषा प्रायः लाक्षणिक रुप में प्रयुक्त सत्य एवं वास्तविक शब्दों के माध्यम से स्वीकार किया जाता है (1938, p.334)। इस परिभाषा का प्रयोग मात्र नैतिक विवाद को समाप्त करने के लिए ही नहीं अपितु अन्य सभी क्षेत्रों (सामाजिक, राजनीतिक, कानूनी, वैज्ञानिक, चिकित्सीय) के विवाद को समाप्त करने के लिए भी किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, 'भ्रूणहत्या' नामक विवाद न केवल नैतिक समस्या है अपितु यह एक सामाजिक, कानूनी एवं चिकित्सीय समस्या भी है। पैट्रिक जे0 हर्ले अपनी पुस्तक *A Concise Introduction to Logic* में प्रवर्तनात्मक परिभाषा के द्वारा 'भ्रूणहत्या' नामक पद का स्पष्टीकरण करते हैं कि प्राचीन अर्थ में यद्यपि यह स्वीकार किया जाता है कि 'भ्रूणहत्या' का अर्थ किसी निर्दोष जीव की निर्मम हत्या है किन्तु इसका एक नवीन वैचारिक अर्थ यह है कि 'भ्रूणहत्या' का अर्थ एक सुरक्षित एवं मान्य शैल्य क्रिया सम्बन्धी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई स्त्री अवांछित कार्य से राहत प्राप्त करती है (2000)।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'भ्रूणहत्या' सम्बन्धी नैतिक, कानूनी एवं चिकित्सीय समस्या ('भ्रूणहत्या' उचित है अथवा अनुचित?) का समाधान प्रवर्तनात्मक परिभाषा के माध्यम किया जा सकता है।

प्रवर्तनात्मक परिभाषा की आलोचना

प्रवर्तनात्मक परिभाषा के सम्बन्ध में मैकक्लोस्की की आपत्ति यह है कि स्टीवेन्सन का यह विचार पूर्णतः एकांगी है कि द्वितीय विश्लेषणात्मक प्रारुप के अन्तर्गत स्वीकृत प्रवर्तनात्मक परिभाषा का एक मात्र उददे्श्य श्रोता के भावनाओं को प्रभावित करते हुए नैतिक संलाप के अर्थ को स्पष्ट करना है, कारण कि नीति दार्शनिक वस्तुतः नैतिक दुष्प्रचारक नहीं हैं। इस प्रकार के कार्य वे सम्पादित भी नहीं करते। मैकक्लोस्की का दावा है कि स्टीवेन्सन की प्रवर्तनात्मक परिभाषा सम्बन्धी सिद्धान्त नैतिक अभिव्यक्तियों के मात्र एक प्रकार के उपयोग एवं दुर्प्रयोग से सम्बन्धित एकांगिता से ग्रसित है (Allan, Leslie, 2015, p.21)। इसी प्रकार प्रवर्तनात्मक परिभाषा की आलोचना करते हुए गर्थ केमरलिंग अपनी लेख "Definition and Meaning" में कहते हैं कि प्रवर्तनात्मक परिभाषा किसी पद के उपयोग के साथ संवेगात्मक अर्थ को समाहित करने का प्रयास है। चूँकि यह कार्य किसी पद के शाब्दिक अर्थ को भ्रामक रुप में प्रस्तुत करता है, अतः प्रवर्तनात्मक परिभाषा का कोई तर्कसंगत प्रयोग नहीं है (2001)।

किन्तु लेस्ली एलन अपनी लेख "A Defence of Emotivism" में स्टीवेन्सन के प्रवर्तनात्मक परिभाषा की बचाव करते हैं। वे कहते हैं कि मैकक्लोस्की की आलोचना इस मिथ्या प्राक्कल्पनाओं पर आधारित है कि नीति दार्शनिक सदैव नैतिक पदों की परिभाषा उत्प्रेरक के रुप में करते हैं। मैकक्लोस्की के इस मत से प्रतीत होता है कि वे स्टीवेन्सन के मत को भ्रामक रुप में स्वीकार करते हैं (2015, p.21)। इस सम्बन्ध में स्टीवेन्सन अपनी पुस्तक *Ethics and Language* में कहते

हैं कि वास्तव में ऐसा नहीं समझना चाहिए कि संवेगात्मक पद की सम्पूर्ण परिभाषा उत्प्रेरक शक्ति से युक्त है। यदि किसी व्यक्ति का उद्देश्य वर्णनात्मक है तो वह संवेगात्मक अर्थ के प्रति तटस्थ रह सकता है। इस प्रकार परिभाषा का प्रयोग वहाँ भी क्रियान्वित किया जा सकता है जहाँ किसी पद के अर्थ की व्याख्या करने का एक मात्र उद्देश्य वर्णनात्मक हो तथा उस पद का संवेगात्मक अर्थ तटस्थ हो। किन्तु कभी–कभी संवेगात्मक पद की परिभाषा अभिप्राय एवं प्रभाव दोनों दृष्टियों से प्रवर्तनात्मक होते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः स्टीवेन्सन के प्रवर्तनात्मक परिभाषा को एक तार्किक युक्ति के रुप में समझा जाना चाहिए जो कि सभी क्षेत्रों (नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, कानूनी, धार्मिक, चिकित्सीय, व्यवसायिक) से सम्बन्धित समस्याओं का उन्मूलन करता है। स्टीवेन्सन प्रवर्तनात्मक परिभाषा को एक तार्किक युक्ति के रुप में स्वीकार करते हुए सभ्यता, दानपुण्य, प्रेम, साहस जैसे अनेक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करके श्रोता के अभिवृत्ति को परिवर्तित एवं प्रभावित करते हैं। इस परिभाषा की महत्वपूर्णता एवं सार्थकता को देखकर ही पश्चात् के तर्कशास्त्रियों एवं भाषाशास्त्रियों ने इसे (प्रवर्तनात्मक परिभाषा) परिभाषा के एक महत्वपूर्ण भाग के रुप में स्वीकार किया।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 Allan, Leslie. (2015). A Defence of Emotivism. *www.Rational Realm.com/philosophy/ethics/defence-emotivism.html,* **1-23.**

2 Aomi, J. (1985). Persuasive Definitions in Social Science and Social Thought, In E. Bulygin, J. L. Gardies & I. Nifiniluoto (eds.). *Man, Law and Modern Forms of Life*, **187-190.**

3 Bentham, J. (1824) *The Book of Fallacies*, In M.P. Mack (ed.). (1969) *The Bentham Reader.* Pegasus, New York.

4 Bunnin, Nicholas & Yu, Jiyuan (2004). Persuasive Definition. *The Blackwell Dictionary of Western Philosophy,* Wiley- Blackwell.

5 Copi, I. M. & Cohen, C. (2001) *Introduction to Logic* (11edition.). Prentice-Hall, Upper Saddle River.

6 Hudson, W.D. (1983) *Modern Moral Philosophy.* Palgrave Macmillan, University of Exeter.

7 Hurley, P.J. (2000) *A Concise Introduction to Logic* (7 edition). Wadsworth Publishing, California.

8 Ogden, C. K. & Richards, I.A. (1959) *The Meaning of Meaning*. Harcourt Brace (first pub.1923), New York.

9 Robinson, R. (1950) *Definition.* Clarendon Press, Oxford.

10 Robinson, R. (1953) *Plato's Earlier Dialectic*. Clarendon Press, Oxford.

11 Stevenson, C.L. (1938). Persuasive Definitions, *Mind*, 47(187), 331-350.

12 Stevenson, C.L. (1944) *Ethics and Language*. Yale University Press, New Haven.

13 Walton, D. (2001). Persuasive Definitions and Public Policy Arguments, *Argumentation and Advocacy*, 37, **117-132**.

14 Walton, D. (2005). Deceptive arguments containing persuasive language and persuasive Definitions, *Argumentation*, 19,**159-186**.